

Q. बुद्ध के प्रथम आर्य सत्य की विवेचना करें।

Explain Buddha's First Noble Truth.

Ans → बुद्ध के प्रथम आर्यसत्य के दुःख की उपस्थिति का वर्णन हुआ है। 'दुःख है' - प्रथम आर्यसत्य है; इसकी सत्यता में कोई भी व्यक्ति सन्देह नहीं कर सकता। दुःख का अस्तित्व स्वयंसिद्ध है। इसे सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है। इस सत्य के अनुसार विश्व दुःखमय है। जीवन का कोई भी क्षेत्र दुःखरहित नहीं कहा जा सकता। 'दीर्घनिकायशुक्ल' में कहा गया है, "जन्म दुःख है, पतन दुःख है, दुःख है स्वयं मृत्यु, जिसे हम नहीं चाहते; उत्पत्ति दुःख है; प्रियजन से विद्योग दुःख है; इच्छा की पूर्ति न होना दुःख है। शरीर, वेदना, संज्ञा, संस्कार और विज्ञान पंचस्कंध कहलाते हैं। पंचस्कंध आसक्ति से उपन्न हैं। आसक्ति दुःख है।"

इसी प्रकार, "जन्म दुःख है। मन की खिन्नता दुःख है, विमारी दुःख है। बुढ़ापा दुःख है। मृत्यु दुःख है।" दुःख के अनेक प्रकार होते हैं, किन्तु इनमें दो अधिक भयानक हैं; ये हैं - जरा (बुढ़ापा) और मृत्यु। यही कारण है कि बुद्ध ने विभिन्न प्रकार के दुःखों को 'जरा-मरण' का नाम से पुकारा है। इस प्रकार सम्पूर्ण विश्व दुःखों से भरा पड़ा है। जीवन में सर्वत्र दुःख ही - दुःख ही।

बुद्ध के अनुसार सुख भी वस्तुतः दुःख ही है।

सुख की प्राप्ति की कामना लगी होती है। जब हमें किसी अभाव की अनुभूति होती है। अभाव की अनुभूति निश्चय ही दुःख है। इस प्रकार, सुख की उत्पत्ति दुःखमय अनुभूति से होती है। सुख की प्राप्ति सद्य ही नहीं हो जाती। इसके लिए व्यक्ति को अनेक कठिनाईयाँ का सामना करना पड़ता है। इस प्रकार सुख की प्राप्ति भी कष्टमय है। सुख की प्राप्ति हो जाने पर इसे बचाए रखने के लिए सतत प्रयत्नशील रहना पड़ता है। सदैव इसके नष्ट हो जाने का भय बना रहता है। इसकी रक्षा के निमित्त व्यक्ति की जीवंत हराम हो जाती है। यह सुख होगा भी है क्षणिक। इसके नष्ट हो जाने पर व्यक्ति को अपार दुःख होगा है। इस प्रकार, सुख, दुःखमय है। विशुद्ध सुख (दुःखरहित सुख) तो कल्पनिक ज्ञापमात्र (pure happiness is myth) है। इसमें भी 'प्रथम आर्थसत्य' की महत्ता सिद्ध होती है।

बौद्ध दर्शन क्षणिकवाद (momentariness) में विश्वास रखता है। इस सिद्धान्त के अनुसार विश्व की प्रत्येक वस्तु क्षणभंगुर है। इसके नष्ट होने पर व्यक्ति का दुःख अत्याधिक बढ़ जाता है। जीवन की प्रत्येक वस्तु के क्षणभंगुर होने की बात स्वयं ही दुःखदायी है। इस प्रकार 'क्षणिकवाद' का सिद्धान्त भी दुःख का अस्तित्व प्रमाणित करता है।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट हो जाता है कि बौद्ध दर्शन जीवन और जगत को दुःखमय मानता है। बुद्ध ने कहा भी है, "विश्व में दुःखियों ने जितने आँसू बहाए हैं, उनका पानी महासागर के जल से भी अधिक है।" उनके अनुसार सम्पूर्ण विश्व दुःखरूपी तपती गद्दी पर स्थित है। और सभी प्राणी दुःखरूपी अग्नि से झुलस रहे हैं।

बुद्ध के प्रथम आर्यसत्य की सामाजिकता को न्यायिक के सिवा सभी भारतीय दार्शनिकों ने स्वीकार किया है। 'जीवन और जगत् में दुःख है', इस सत्य में अविश्वास करने का कोई कारण नहीं है। केवल न्यायिक ने इस प्रथम आर्यसत्य को अस्वीकार किया है। उन्होंने विश्व को सुखमय बताया है और सुखद विषयों के भोग की सलाह दी है। किन्तु न्यायिक का मत भारतीय दर्शन में महत्वपूर्ण नहीं माना जाता है। इसके सिवा अन्य सभी भारतीय विचारक दुःख की व्यापकता में विश्वास रखते हैं। और मोक्ष को जीवन की चरम आदर्श मानते हैं।

बुद्ध के प्रथम आर्यसत्य का शक्तिपूर्ण पश्चात्य विचारक शॉपेनहावर (Schopenhauer) के दर्शन में भी मिलता है। शॉपेनहावर ने भी जीवन को दुःखमय बताया है। इसके अनुसार यह विश्व अन्य सभी संभव विश्वों में सबसे बदतर है। बुद्ध और शॉपेनहावर के विचारों में समानता पाकर कुछ लोग बुद्ध को भी शॉपेनहावर की भाँति ही निराशावादी घोषित करते हैं, किन्तु यह आक्षेप सर्वथा अज्ञात है।

बुद्ध ने दुःख दूर करने का मार्ग बताया है, जिसे 'अष्टांगिक मार्ग' (The Eightfold Path) कहते हैं। इस मार्ग पर चलकर व्यक्ति दुःखों से पूर्ण मुक्ति प्राप्त कर सकता है। दुःखरहित अवस्था को यहाँ निर्वाण कहा गया है। इसकी प्राप्ति इस जीवन में भी की जा सकती है। स्वयं बुद्ध बौद्धलौकिक या निर्वाण प्राप्ति के बाद भी अस्सी वर्ष की उम्र तक लौकिक के कार्य में संलग्न रहे। इस प्रकार दुःखनिरोध का मार्ग दिखाकर बुद्ध ने निराशावाद की संचार किया है।